Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 25/May/2023 IJRAW: 2023; 2(6):136-137 Accepted: 30/June/2023

मानवीय संवेदना के झरोखे में पोस्ट बॉक्स नंबर २०३ नालासोपारा

[*1]संजू गौरीशंकर उपाध्याय

[*1]Assistant Professor, Department of Hindi, SMRK BK AK Mahila Mahavidyalaya Nashik, Maharashtra, India.

सारांश

दूसरे की वेदना से उत्पन्न वेदना, संवेदना है चित्रा मुगदल द्वारा रचित उपन्यास पोस्ट बॉक्स नंबर २०३ नालासोपारा में वहीँ मानवीय संवेदना का चित्रण बड़े ही मार्मिक ढंग से दिखाई देता है।'किन्नर', 'हिजड़ा', 'थर्ड जेंडर' वह जाति है जिसके जीवन में संघर्ष है। फिर भी जीने की जिजीविषा है। इन्हें भी समाज में मौका मिलता तो शायद इनमें से कोई चिकित्सक, अभियंता यह संचालक बन सकते थे। हमारे तिरस्कार के कारण ही उन्हें भीख माँगना पड़ता है और दूसरों के सामने नाच गाकर अपनी जीविका चलानी पड़ती है।

मूल शब्द: संवेदना, पोस्ट बॉक्स नंबर २०३, किन्नर

प्रस्तावना

१० दिसंबर, १९४३ को चेन्नई में जन्मी और मुंबई में शिक्षक चित्रा मुदगल आधुनिक भारतीय साहित्य में एक समृद्ध नाम है। सामाजिक, आर्थिक और मानवीय अधिकारों से वंचित रहने वालों पर इन्होंने सबका ध्यान केंद्रित किया है। मुद्गल जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया है । सामान्य लोग जिनके बारे में कोई सुनना भी नहीं चाहता ऐसे लोगों के बारे में उन्होंने लिखा है।

यह कहानी ऐसे एक पात्र की है, जो परिस्थितियों के कारण जिनका नया नामकरण होता है। विनोद, विमली, बिन्नी या फिर अपनी माँ का लाडला दिकरा |मुंबई शहर चकाचौंध की दुनिया है जहाँ अपना खुद का आवास लेना तो दूर ही बात है। किराए पर भी आवास लेने की ताकत नहीं होती लोगों में,नालासोपारा मुंबई के पास की ऐसी जगह है जहाँ से रहकर लोग मुंबई के आवास का लुफ्त ले सकते हैं | पात्र इसी जगह पर रहता है। कहानी के पत्र जरिए आगे बढ़ती है। विनोद नामक पात्र खुद जो तकलीफ महसूस करता है, अपनी व्यथा परिवार से दूर रहने का दुख अपनी माँ की पल-पल की याद बताता है। जब विनोद किशोरावस्था तक पहुँचता है। तब उसे लिंग विकृति के बारे में मालूम पड़ता है, समाज के कारण उसे ना चाहते हुए परिवार से दूर रहना पड़ता है। पिता जैसे-तैसे भूल जाते हैं पर माँ (बा) हर समय रोती है। पत्राचार के जरिए माँ और बच्चे की वेदना झलकती है।

इस उपन्यास में बिन्नी उर्फ विमली कहता है कि बा अगर सोनोग्राफी से पता लगाया जा सकता होता तो आप पहले ही सोनोग्राफी करवा लेती और मुझे इस दुनिया का सामना ना करना पड़ता। जैसे मोटा भाई अपनी पत्नी सेजल की सोनोग्राफी करवा रहे हैं।

इस समाज के डर से परिवार वाले बिन्नी को किन्नरों को सौंप देते हैं और समाज में रिश्तेदारों से सच कहने का सामना नहीं कर सकते हैं, कहते हैं-बिन्नी का एक्सीडेंट हो चुका है और स्कूल में शोक सभा भी करवा दी जाती है। जब किसी दोस्त से उसे इस घटना के बारे में पता चलता है | तब वह सोचता है, "मेरी गलती क्या है ? बड़ा-सा प्रश्न चिन्ह है। हम सबके सामने |" अपनी बा से सारे सुख-दुख पत्र के जरिए कहता है कि बा मैं जब स्कूल से आता हूँ तब तू मेरे लिए दही फाड़कर श्रीखंड बनाती थी ना। बा, बहुत याद आता है। तेरे हाथ का थेपला इतना मार्मिक चित्रण बच्चे और माँ के बीच। मैं अपने आँसुओं को नहीं रोक पाती हूँ । जितनी बार पढ़ती हूँ | मेरे भी सामने वह चरित्र जागृत सा दिखाई पड़ता है। हर किन्नर में, जो अपने परिवार से दूर हो जाते हैं बिना कारण के।

उपन्यास में ज्योत्सना नामक लड़की है। जिसे दिल से प्रेम करता है और वह कहता है |"सब कुछ बता देता उसे, कह देता, तुम मुझसे फेरे भर लेले । अपनी इच्छाएँ जीने के लिए तू स्वतंत्र है। बच्चा हम गोद ले लेंगे। गोद नहीं लेना चाहेगी तो तू स्वतंत्र है, जिससे मर्जी है, बच्चा पैदा कर ले, खुशी से उसे अपना नाम दे दूँगा ।" जो एक बाप से औलाद की उम्मीद करता है। हम पूर्ण रूप से सक्षम है। फिर भी अपना प्यार बाँट नहीं सकते हैं लेकिन इस पात्र में कितना बड़ा साहस है जो सोचने पर भी मजबूर कर देता है।हर समय माँ की परेशानियों को पूछना। नवरात्रि में माँ के हाथों बना फलाहार खाने के लालायित होना। ज्योत्सना को घाघरा पहने गरबा खेलते हुए देखना, यह छोटी-छोटी बातें पिताजी के पेसमेकर के बारे में पूछना। छोटी-छोटी बातें हमें भाव विभोर कर देती हैं । उस बच्चे की बस यह गलती है कि वह किन्नर है।

कक्षा में हमेशा अव्वल आना फिर भी समाज के कारण शिक्षा छुड़वा देना नापसंद समाज की तकलीफ खुद झेलना, सिर्फ माँ की आवाज़

***Corresponding Author:** संजू गौरीशंकर उपाध्याय

सुनने के लिए चोरी-छिपे माँ को फोन करना पिता की आवाज़ सुनकर डर कर फोन रख देना। एक अपराधी की तरह वह अपराध सहना जो उसने किया ही नहीं है।
राजनीति का घिनौना खेल भी उसके साथ खेला जाता है | एक किन्नर पात्र पूनम है उसी के गिरोह की जो उसे बेहद पसंद करती है और उसी के जरिए वह अपनी अधूरी शिक्षा को पूर्ण कर पाता है।
अंत में मुद्गल जी कहती हैं । किन्नर बिरादरी का संघर्ष उन्हें मनुष्य माने जाने का संघर्ष है। उनकी माँग है कि हमें अदर्स (others) में ना ढकेले|

निष्कर्ष

अंत में एक स्वर्गवासी माँ का माफीनामा अपने किन्नर बच्चे से घर वापसी की अपील भी होती है। यह युवक अपने परिवार खासकर अपनी माँ से सवाल करता है कि "लंगड़ा, लूला, बहरा, वह मानसिक रूप से विकलांग होने पर तो कोई माँ अपने बच्चे को घर से नहीं निकालती तो लिंग दोषियों के संग ऐसा व्यवहार क्यों ?
कैसी विडंबना है कि जिसे माँ पिता बनने का अधिकार नहीं है वहीँ दूसरों की खुशियों में बधाइयाँ बाँटने जाते हैं। यह सारी बातें हमारे लिए सिर्फ एक प्रश्न चिन्ह है। विमली, बिन्नी या विनोद ऐसा सजीव प्राणी हमें हर रोज चौराहे पर दिखता है जो दो वक्त की रोटी के लिए तालियाँ बजाता है और सभी के लिए हँसी का पात्र बन जाता है। हर किन्नर की अपनी एक कहानी है। मुदगल जी ने " पोस्ट बॉक्स नंबर २०३ नालासोपारा " के जरिए सभी किन्नरों की तरफ ध्यान केंद्रित किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पोस्ट बॉक्स नंबर २०३ नालासोपारा: चित्रा मुगदल : प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली : संस्करण २०१६
2. गुलाम मंडी : प्रकाशन :सामायिक प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली:संस्करण २०२१
3. थर्ड जेंडर:तीसरी ताली का सच ::डॉ.शगुफ्ता नियाज :: विकास प्रकाशन कानपुर : संस्करण २०२१
4. ४)पुरूष तन में फँसा मेरा नारी मन ::मनोबी बंदोपाध्याय :राजपाल एंड संस दिल्ली : संस्करण २०१८
5. मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी :लक्स्मी नारायण त्रिपाठी : प्रकाशन :वाणी प्रकाशन नई दिल्ली: तृतीयसंस्करण २०२१